भरी हुई जेब आपको गलत रास्ते पर ले जा सकती है लेकिन खाली जेब जिंदगी का मतलब समझाती है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह

देहरादून शुक्रवार 22 मई 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा

उद्योग जगत ने पीएम की घोषणाओं का स्वागत किया है। उम्मीद करें कि इससे हर वर्ग को लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री ने 'आत्मनिर्भर भारत' का नया नारा देते हुए कहा कि अब वक्त आ गया है जब देश को आत्मनिर्भर बनना होगा और इसके लिए हर वर्ग को अपनी भूमिका निभानी होगी।

नवीन भट्टनागर।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए लागू लॉकडाउन से प्रभावित लोगों और छोटे–मंझोले उद्यमों के लिए मंगलवार को 20 लाख करोड़ के एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की। हालांकि इसमें सरकार की ओर से पिछले दिनों दी गई आर्थिक सहायता और रिजर्व बैंक के फैसलों के जरिए दी गई राहत भी शामिल है। यह पैकेज देश की जीडीपी के 10 फीसदी के आसपास है।

राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने 'आत्मनिर्भर भारत' का नया नारा देते हुए कहा कि अब वक्त आ गया है जब देश को आत्मनिर्भर बनना होगा और इसके लिए हर वर्ग को अपनी भूमिका निभानी होगी। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए स्थानीयता पर जोर देना होगा। यानी लोकल को वोकल होना पड़ेगा। उनके मुताबिक, आत्मनिर्भरता का अभियान पांच स्तंभों पर टिका होगारू अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, प्रणाली, जीवंत लोकतंत्र और मांग। इसके साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भरता का मतलब दुनिया से कनेक्शन तोड़ लेना नहीं है। बुधवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस पैकेज के एक हिस्से के बारे में विस्तार से जानकारी दी कि इससे किस क्षेत्र को क्या मिलेगा। उन्होंने बताया कि सूक्ष्म, लघु और मंझोले उद्यमों (एमएसएमई) को 3 लाख करोड़ का लोन दिया जाएगा। यह लोन 4 साल के लिए और शत प्रतिशत गारंटी–फ्री होगा।

गैरबैंकिग वित्तीय कंपनियों की लिक्विडिटी की समस्या दूर करने के लिए 30 हजार करोड़ रुपये की स्पेशल लिक्विडिटी स्कीम शुरू होगी। मुश्किलों में घिरी राज्यों की पावर जनरेटिंग कंपनियों को बढ़ावा देने के लिए 90,000 करोड़ रुपये दिए जाएंगे। डिस्कॉम यानी पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों को भी इससे फायदा मिलेगा। 15 हजार से कम सैलरी वाले कर्मचारियों की सैलरी का 24 प्रतिशत हिस्सा सरकार उनके पीएफ में जमा करेगी।

इन कदमों के जरिये देश को आत्मनिर्भरता की दिशा में ले जाने की बात उन्होंने भी दोहराई। दरअसल यह बात स्पष्ट हो गई है कि कोरोना के इस दौर में हर देश को अपनी अर्थव्यवस्था का ढांचा नए सिरे से खड़ा करना होगा। आपसी सहयोग की जरूरत तो उन्हें पड़ेगी लेकिन भूमंडलीकरण जैसे रिश्तों की वापसी अब शायद संभव नहीं है। वैसे भी अमेरिका सहित कई देशों ने संरक्षणवादी नीतियां पहले ही अपनानी शुरू कर दी थीं। अभी के हालात में बाहरी बाजार या पूंजी से बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए हमें अपने अंदर की संभावनाओं को पहचानना होगा और खुद को भीतर से ताकतवर बनाना होगा।

हमारी ताकत शुरू से ग्रामीण कुटीर और लघु उद्योग ही रहे हैं। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री ने इनकी क्षमता को रेखांकित किया और कहा कि केवल एमएसएमई की मदद से ही आत्मनिर्भरता हासिल की जा सकती है। वोकल फॉर लोकल अभियान से मोदी के 'मेक इन इंडिया' अभियान को एक नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद है। यह उनकी सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट रहा है लेकिन इसे अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई। संभव है कि अब यह परवान चढ़े।

पतंग की डोर

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। इस प्रक्रिया को एक तरह से पतंग उड़ाने की कोशिश से जोड़ा जा सकता है। हम पतंग की डोर हमेशा उसे और उपर उठाने के लिए खींचते हैं। ऐसा करने से वाकई में पतंग और उंचा उड़ता है लेकिन पतंग हमसे जुड़ा रहे, इसके लिए डोर को ढ़ील देने के साथ–साथ उसपर हमारी पकड़ भी अच्छी होनी चाहिए।

पतंग को उंचा ले जाने के लिए हमें हवा और पतंग की आपसी बातचीत पर विश्वास करना होगा। जितना अधिक हम ड़ोर को ढ़ील देंगे, पतंग उतनी ही उंची उड़ान भरने में सक्षम होगा। इस प्रक्रिया के दौरान हमें निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है कि हमें पतंग को कितना खींचने की आवश्यकता है ताकि पतंग सही दिशा में उड़ता रहे। पतंग हमारी सोची हुई दिशा में उड़ता है या किसी और दिशा में, इस बात का पता केवल तभी लगाया जा सकता है जब हम पतंग को ऊपर जाने की अनुमति देंगे।

संपादकीय

ट्रंप की तकलीफ

अमेरिका की तकलीफ यह है कि डब्ल्यूएचओ उसकी हां में हां नहीं मिला रहा। बीती 1 मई को डब्ल्यूएचओ ने वूहान के अस्पतालों में कोरोना का एक भी मरीज न होने की खबर का स्वागत किया। उसने यह भी कहा कि कोरोना वायरस वूहान की लैब से पैदा नहीं हुआ, जैसा ट्रंप मानते हैं। उसने दावा किया कि 'संक्रमण फैलने के क्रम का अध्ययन करने के बाद हम आश्वस्त हैं कि यह वायरस प्राकृतिक है।'

परंतु आज दुनिया के सबसे अमीर राष्ट्र में 90,000 से ज्यादा लोग कोरोना से मारे जा चुके हैं और यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। ट्रंप का ध्यान इस आंकड़े पर कम, सनसनी पर ज्यादा है। ट्रंप कोरोना के बहाने चीन से फैक्ट्रियां अमेरिका वापस लाने का आह्वान कर रहे हैं। कुछ अन्य देश भी इसी प्रयास में जुटे हैं। जनवरी बीत गई, फरवरी बीत गई पर ट्रंप के कानों पर जूं नहीं रेंगी। उलटे उन्होंने चीन के लॉकडाउन का मजाक उड़ाया, इसे एक बर्बर समाज की निशानी और मानवाधिकारों का हनन बताया। ट्रंप ने डब्ल्यूएचओ की फंडिंग बंद करने की घोषणा भी की हालांकि तीखी आलोचना के बाद इस फैसले पर पुनर्विचार की बात कहते हुए संकेत दिया कि अमेरिका डब्ल्यूएचओ को 10 फीसदी फंडिंग जारी रख सकता है। चीन के मशहूर चित्रकार ली झोंग ने एक साक्षात्कार में कहा है– 'चीन के बारे में बेशक कुछ लोग बुरी बातें कहते रहें, पर आज हर कोई चीन से मदद मांग रहा है और चीन दे भी रहा है। हमने अपने उपकरण और डॉक्टर 120 देशों में भेजे हैं। इस वायरस को हराना हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है और यह वैश्विक एकता की मांग करती है।'

इस मसौदे में अमेरिका ने कोरोना वायरस को 'वूहान वायरस' कहना चाहा था। 6 करोड़ की आबादी वाला वूहान शहर चीन के हूपेई प्रांत की राजधानी है। इससे पहले ट्रंप इसे 'चाइनीज वायरस' भी कह चुके थे।

कोरोना को 'वूहान वायरस'

अजेय कुमार।

जी–7 राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों की 25 मार्च, 2020 को हुई बैठक कोई संयुक्त बयान जारी नहीं कर सकी। बयान जारी करने की जिम्मेदारी अमेरिका की थी लेकिन जो मसौदा उसने तैयार किया, उस पर कई सदस्य राजी नहीं थे। इस मसौदे में अमेरिका ने कोरोना वायरस को 'वूहान वायरस' कहना चाहा था। 6 करोड़ की आबादी वाला वूहान शहर चीन के हूपेई प्रांत की राजधानी है। इससे पहले ट्रंप इसे 'चाइनीज वायरस' भी कह चुके थे। मेडिकल जर्नल 'द लांसेट' के अनुसार दुनिया में कोरोना के पहले मरीज का पता 1 दिसंबर, 2019 को चला। तब तक यह जानकारी नहीं थी कि यह वायरस सिर्फ जानवर से इंसान में फैलता है या एक इंसान से दूसरे इंसान में भी फैल सकता है।

26 दिसंबर, 2019 को हूपेई प्रांत के एक मशहूर अस्पताल में सांस रोगों से संबंधित विभाग की निदेशक डॉ. झांग ने खतरे की घंटी तब बजाई, जब उन्होंने तेज बुखार और खांसी से पीड़ित एक बुजुर्ग कपल में एक ऐसा लक्षण पाया, जो अब तक दुनिया भर में पाए गए वायरसों से भिन्न था। 29 दिसंबर, 2019 तक हूपेई प्रांत के अधिकारियों को यह जानकारी नहीं थी कि कोई नया वायरस इस दुनिया में कदम रख चुका है। 30 दिसंबर को यह जानकारी होने के बाद प्रांत के अधिकारियों ने इसे 'चाइना सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल' (सीडीसी) तक पहुंचाया और फिर 31 दिसंबर को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) को सूचित किया गया। फिर चीन ने इस नए वायरस की सीमित जानकारी पब्लिक डेटा बेस पर अपलोड की और पूरे विश्व को इस नए कोरोना वायरस का पता चल गया।

इस बीच एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में वूहान सेंट्रल हॉस्पिटल के दो डाक्टरों डॉ. ली और डॉ. आई फेन ने इस वायरस से जुड़ी कुछ जानकारियों को सार्वजनिक किया जिससे उन्हें वहां के अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ा। अधिकारियों का मत था कि जब तक इस नये वायरस के बारे में स्पष्टता न हो जाए, तब तक सूचनाओं को सार्वजनिक करना गलत नतीजों तक ले जा सकता है। बाद में पता चला कि इन डॉक्टरों का पक्ष सही था और उन्हें बिना वजह फटकार लगाई गई। कोरोना वायरस से पहली मौत 11 जनवरी को हुई। 20 जनवरी को इसकी पुष्टि हुई कि यह संक्रमण मानव से मानव में फैलता है। वूहान में 23 जनवरी को संपूर्ण लॉकडाउन घोषित किया गया।

19 मार्च को वूहान पब्लिक सिक्यॉरिटी ब्यूरो ने स्वीकार किया कि दोनों डॉक्टरों डॉ. ली और डॉ. आई फेन तथा उनके अफसरों को दंडित करना गलत था। ऐसी ही माफी डॉ. आई फेन से मांगी गई। दुर्भाग्यवश, डॉ. ली की मृत्यु 7 फरवरी, 2020 को ही कोरोना वायरस से हो गई और पूरा सच दुनिया के सामने न आ सका। बेशक, उन्हें चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का सर्वोच्च सम्मान मृत्यु–उपरांत दिया गया।

इस घटनाक्रम को देखते हुए यह कहना शायद गलत होगा कि चीन की सरकार ने जान बूझकर सूचनाओं को दबाए रखा। अभी तक यह अस्पष्ट ही है कि एक अनजान वायरस से सामना होने पर चीन इससे अलग और क्या कर सकता था।

सूडोकु नवताल- 5355

***** कठिनतम

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5354 का हल

2	9	7	1	3	6	4	8	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2

अपना ब्लॉग

बहुत सुस्ती दिखाई

मोहन। सचाई यह है कि अमेरिका, ब्रिटेन और कई देशों ने कोरोना से निपटने में बहुत सुस्ती दिखाई जबकि चीन ने अमेरिका की जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी और डब्ल्यूएचओ से मिलकर कोरोना वायरस के जेनेटिक स्ट्रक्चर को डिकोड किया, उसे पूरे विश्व के नामी डॉक्टरों के साथ शेयर किया और संक्रमण विरोधी उपचार विकसित किया। रातों–रात विशाल अस्पताल खड़े किए, ऑक्सिजन, वेंटिलेटर्स की कमी न रहने दी और प्रति सप्ताह 16 लाख लोगों के टेस्ट किए। यूरोपियन सीडीसी और कई अमेरिकी वैज्ञानिकों ने 16–24 फरवरी, 2020 को स्थिति का जायजा लेने वूहान शहर का दौरा किया तो उन्होंने चीनी जनता के सामूहिक प्रयास और एकजुटता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। वर्ष 2020 के पहले दिन जब चाइनीज सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (सीडीसी) के विभागाध्यक्ष डॉ. जॉर्ज एफ काओ ने अमेरिकी सीडीसी के अध्यक्ष डॉ. रॉबर्ट रेडफील्ड को इस नए वायरस के बारे में बताने के लिए फोन किया तो न्यूयॉर्क टाइम्स में छपी रिपोर्ट के अनुसार डॉ. जॉर्ज 'फूट–फूट कर रो पड़े'। उनकी चेतावनी को गंभीरता से नहीं लिया गया।